

निर्वाणकाण्ड

श्री भैया भगवतीदास कृत





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

(दोहा)

वीतराग वन्दौं सदा, भावसहित सिर नाय ।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय ॥





सर्वोदय अहिंसा

॥ सर्वः सर्वत्र नन्दतु ॥

(चौपाई)

अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चम्पापुरि नामि ।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, बन्दौं भाव-भगति उर धार ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

चरम तीर्थंकर चरम-शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर ।
शिखर समेद जिनेसुर बीस, भावसहित बन्दों निश-दीस ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

वरदत्तराय रु इन्द्र मुनिन्द, सायरदत्त आदि गुणवृन्द ।
नगर तारवर मुनि उठकोड़ि, बन्दौं भावसहित कर जोड़ि ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

श्री गिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात ।
शम्भु प्रद्युम्न कुमार द्वै भाय, अनिरुध आदि नमूँ तसु पाय ॥





सर्वोदय अहिंसा

॥ सर्वः सर्वत्र नन्दतु ॥

रामचन्द्र के सुत द्वै वीर, लाडनरिन्द आदि गुणधीर ।
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति मँझार, पावागिरि बन्दों निरधार ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

पाण्डव तीन द्रविड़-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान ।
श्री शत्रुंजय गिरि के सीस, भावसहित बन्दौं निश-दीस ॥





सर्वोदय अहिंसा

॥ सर्वः सर्वत्र नन्दतु ॥

जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये ।
श्री गजपन्थ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँ काल ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

राम हणू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील महानील ।
कोड़ि निन्याणव मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वन्दौं धरि ध्यान ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

नंग-अनंगकुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमाण ।
मुक्ति गये सोनागिरि शीश, ते बन्दौं त्रिभुवनपति ईस ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा-तट सार ।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते बन्दों धरि परम हुलास ॥





सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहाँ छूट ।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोड़ि वन्दौं भव पार ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

बड़वानी बड़नगर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उत्तंग ।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते बन्दौं भव-सागर-तर्ण ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

सुवरणभद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वर शिखर मँझार ।
चेलना नदी-तीर के पास, मुक्ति गये बन्दों नित तास ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र तन्दतु ==

फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिररूप ।
गुरुदत्तादि मुनीश्वर जहाँ, मुक्ति गये बन्दौं नित तहाँ ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

बालि महाबालि मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय ।
श्री अष्टापद मुक्ति मँझार, ते बन्दौं नित सुरत सँभार ॥



== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==



सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अचलापुर की दिश ईसान, तहाँ मेंढगिरि नाम प्रधान ।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

वंशस्थल वन के ढिग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय ।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे ।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करूँ जोरि जुग पान ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

समवसरण श्रीपार्श्व-जिनंद, रेसन्दीगिरि नयनानन्द ।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते बन्दौं नित धरम-जिहाज ॥





सर्वोदय अहिंसा

॥ सर्वः सर्वत्र नन्दतु ॥

मथुरापुर पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामी जी निर्वाण ।
चरम केवली पंचम काल, ते बंदौं नित दीनदयाल ॥



सर्वोदय अहिंसा

॥ सर्वः सर्वत्र नन्दतु ॥



सर्वोदय अहिंसा

॥ सर्वः सर्वत्र नन्दतु ॥

तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजै तहाँ ।
मन-वच-काय सहित सिरनाय, वन्दन करहिं भविक गुणगाय ॥





सर्वोदय अहिंसा

== सर्वः सर्वत्र नन्दतु ==

संवत् सतरह सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल ।
'भैया' वन्दन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल ॥

